

## परिवार में प्रचलित रीति-रिवाज

भारतीय ऋषियों एवं धर्मशास्त्रों में संस्कारों की आवश्यकता बतलाई गई है। उसके लिए कुछ ऐसे उपचारों का आविष्कार किया है, जिनका प्रभाव शरीर तथा मन पर ही नहीं वरन् सूक्ष्म अंतःकरण पर भी पड़ता है। संस्कार वह उपचार हैं जिससे मनुष्य से मानव हो जाता है, अर्थात् वह सभ्य हो जाता है। संस्कारित न होने के कारण मनुष्येतर प्राणी असभ्य होता है।

संस्कारों का यह प्रावधान विज्ञान सम्मत ही है। दुनिया की सभी संस्कृतियां मनुष्य को अपनी-अपनी तरह से संस्कारित करती हैं। संस्कारों से आत्मा, अंतःकरण शुद्ध होता है। संस्कार मनुष्य को पाप और अज्ञान से दूर कर आचार-विचार और ज्ञान-विज्ञान से संयुक्त करते हैं, ताकि मनुष्य अनुशासित जीवन-यापन कर सकें।

जिस प्रकार अनेक रंगों का उचित उपयोग करने पर चित्र में सुन्दरता, आकर्षण एवं पूर्ण वास्तविकता आ जाती है, उसी प्रकार शास्त्रानुसार अपने संस्कार करने से मनुष्य की बुद्धि और मन में सात्विकता एवं सर्वजनप्रियता का संचार होता है तथा उससे वास्तविक सुख-शांति का अनुभव होता है। जिस तरह प्रत्येक धर्म या संस्कृति में निश्चित संस्कार हैं, उसी तरह हिन्दू धर्म व्यवस्था में संस्कारों की एक निश्चित संख्या है।

जीवन को मंगलमय बनाने की प्रक्रिया का नाम संस्कार है। मानव के चरित्र निर्माण और आध्यात्मिक उन्नति के लिए संस्कार आवश्यक है। ये मानव जीवन के मूल स्रोत हैं। संस्कार का सम्बन्ध मानव के कर्म और व्यवहार से है, मानव को जन्म के समय जैसे संस्कार मिलते हैं, प्रायः वैसा ही भावी जीवन बनता है। इसीलिए हमारे शास्त्र में सोलह संस्कारों का वर्णन है। इसमें से कुछ संस्कार जन्म से पूर्व किये जाते हैं। कुछ जीवन में और कुछ मृत्यु के पश्चात् भी किये जाते हैं।

आज के समय में हम संस्कारों को भूल गये हैं इसी कारण विभिन्न

समस्याओं में उलझे रहते हैं, अपने शास्त्रों द्वारा निर्धारित संस्कारों को करने पर ही मानव सच्चा मानव बन सकता है।

महर्षि श्री व्यासजी द्वारा प्रतिपादित प्रमुख षोडश (सोलह) संस्कार इस प्रकार माने गये हैं-

१. गर्भधान, २ प्रवसन, ३. सीमन्तोन्नयन, ४ जातकर्म, ५ नामकरण, ६ निष्क्रमण, ७ अन्नाप्राशन, ८ चूड़ाकर्म, ९ कर्णभेद, १० उपनयन, ११ शिक्षा, १२. समावर्तन, १३ विवाह, १४ वानप्रस्थाश्रम, १५ सन्यासश्रम, १६ अंत्येष्टि संस्कार।

अगर इन संस्कारों की आज के इस भीषण युग में व्याख्या कर उनकी विवेचना करें तो यह अर्थ सामने आता है कि इन संस्कारों को आयु एवं आयु सम्बन्धी शारिरिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही श्रृंखलाबद्ध किया गया है। यहां मुख्य रूप से तीन संस्कार हैं - १ जन्म, २ विवाह, ३ अंत्येष्टि (दाह संस्कार) जिसमें परिजनों, सम्बन्धियों एवं समाज की विशेष भागीदारी रहती है, ताकि समरूपता तो बनी ही रहे तथा उनका अभिप्राय भी समझा जा सके।

त्यौहार की तरह रीति रिवाज भी हर परिवार में अलग-अलग तरह से मनाये जाते हैं। हमारे रीति रिवाज हम कैसे मनाते हैं, जन्म से मृत्यु तक इन बातों की जानकारी हम यहाँ देने की कोशिश कर रहे हैं।

हमारे परिवार में बच्चे के जन्म से पूर्व व पश्चात कुछ प्रथाएं हैं।